गये हैं नहीं तो मैं आपको उनका भी परसेंटज बतला देता । वे भी तीन या चार परसेंट के बीच में होंगे । मैं जब सवाल करता हूं तो उसके जवाब में या तो यह लिख दिया जाता है कि अभी इनफोरमेशन इकट्ठी की जा रही है या फिर उसके पूरे आंकड़े नहीं दिये जाते हैं । मैं माननीय मंत्री से प्रार्थना करूंगा कि मुझे वह बतलाने की कृपा करें कि अब तक जो साढ़े १२ परसेंट का रिजरवेशन होना चाहिये उसकी कहा तक पूर्ति हुई है । सन् १९६१ के सैंशस के मुताबिक इस देश के अन्दर २१.५२ परसेंट हरिजन और शेड्यूल्ड कास्ट्स की आबादी है लेकिन रिजरवेशन का जो परसन्टेज है वह सिर्फ साढ़े १२ प्रतिशत है । इतना ही नहीं मैं उत्तर प्रदेश की ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हुये कहूंगा कि उत्तर प्रदेश के अन्दर ५४ जिले हैं जिनमें कि ५४ डी० एम० और ५४ ही एस० पीज० होंगे । मंत्री जी कृपा करके बतलायें कि उनमें कितने हरिजन रक्खे गये हैं ?

रिजरवेशन का जहां तक सवाल है एलैक्शंस में वह अवश्य पूरा कर दिया जाता है । चुनावों में हरिजनों को चुनाव लड़ने के लिये पूरी सीट दी जाती हैं । ऐसा क्यों किया जाता है ? ऐसा इसलिये किया जाता जाता है ताकि उस इलाके के जो बाअसर आदमी हों वह इस सदन के अन्दर आ जायं और उनके असर के कारण वहां की जनता पूरी तरह दबी रहे । स्वयं अपने केन्द्रीय मंत्रिमंडल को देख लिया जाय । १८ कैबिनेट मिनिस्टर्स में १ हरिजन है । १२ स्टेट मिनिस्टर्स हैं उनमें कोई हरिजन नहीं है । २२ उपमंत्री हैं उनमें केवल एक हरिजन उपमंत्री है । सभासचिव जोकि सब से कम हैं अर्थात् ६ हैं उनमें दो हरिजन हैं । इसका मतलब यह हुआ कि ५८ में आपके यहां कुल चार हैं.....

श्री लाल बहादुर शास्त्री : अब माननीय सदस्य को अगर अपने ही बारे में ठीक-ठीक खबर नहीं है तो फिर मैं क्या कहूं । मैं जिस रूप में वह जिक्र कर रहे हैं उस रूप में तो बतलाना नहीं चाहता कि कितने हरिजन डिप्टी मिनिस्टर्स हैं मगर इतना अवश्य कहूंगा कि जो उन्होंने डिप्टी मिनिस्टर एक बतलाया वह बात उनकी बिलकुल ठीक नहीं है ।

श्री विश्राम प्रसाद : तो दो होंगे ।

श्री लाल बहादुर शास्त्री : दो भी गलत हो सकते हैं ।

श्री राम सेवक यादव (बाराबंकी) : मंत्री महोदय स्वयं इसको बतला दें कि कितने हैं, आखिर इसमें शर्माने की क्या बात है ?

श्री लाल बहादुर शास्त्री : आप क्यों सवाल करते हैं ? आपको इस में ज्यादा मजा आता है कि दूसरों के बीच में बिना बात दखल दें । मैं तो उन से बात कर रहा हूं ।

श्री राम सेवक यादव: उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक व्यवस्था का प्रश्न उठाना चाहता हूं.....

उपाध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइये ।

श्री राम सेवक यादव : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाएंट आफ आर्डर है । मैं सदन में एक व्यवस्था का प्रश्न उठाना चाहता हूं.....

उपाध्यक्ष महोदय : आर्डर, आर्डर । कोई प्वाएंट आफ आर्डर नहीं है ।

श्री राम सेवक यादव : उपाध्यक्ष महोदय, बगैर मुझ सुने ही कैसे कहा जा रहा है कि कोई प्वाएंट औफ आर्डर नहीं है, मुझे सुन तो लिया जाय.....

Mr. Deputy-Speaker: Order, order. There is no point of order. There cannot be a point of order in the middle of a speech.